**आरती कुंजबिहारी की | Aarti Kunj Bihari Ki Lyrics**

**आरती कुंजबिहारी की,**
**श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥**
आरती कुंजबिहारी की,
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥गले में बैजंती माला,
बजावै मुरली मधुर बाला ।
श्रवण में कुण्डल झलकाला,
नंद के आनंद नंदलाला ।
गगन सम अंग कांति काली,
राधिका चमक रही आली ।
लतन में ठाढ़े बनमाली
**भ्रमर सी अलक,**
**कस्तूरी तिलक,**
**चंद्र सी झलक,**
**ललित छवि श्यामा प्यारी की,**
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

*आरती कुंजबिहारी की,*
*श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥*

कनकमय मोर मुकुट बिलसै,
देवता दरसन को तरसैं ।
गगन सों सुमन रासि बरसै ।
**बजे मुरचंग,**
**मधुर मिरदंग,**
**ग्वालिन संग,**
**अतुल रति गोप कुमारी की,**
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ॥

*आरती कुंजबिहारी की,*
*श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥*

जहां ते प्रकट भई गंगा,
सकल मन हारिणि श्री गंगा ।
स्मरन ते होत मोह भंगा
**बसी शिव सीस,**
**जटा के बीच,**
**हरै अघ कीच,**
**चरन छवि श्रीबनवारी की,**
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ॥

*आरती कुंजबिहारी की,*
*श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥*

चमकती उज्ज्वल तट रेनू,
बज रही वृंदावन बेनू ।
चहुं दिसि गोपि ग्वाल धेनू
**हंसत मृदु मंद,**
**चांदनी चंद,**
**कटत भव फंद,**
**टेर सुन दीन दुखारी की,**
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ॥

*आरती कुंजबिहारी की,*
*श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥*

आरती कुंजबिहारी की,
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥
आरती कुंजबिहारी की,
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

**allbhajan.com**